निष्कर्ष और मूल्यांकन

"बलदेव वंशी के काव्य में सामाजिक चेतना' शोध कार्य को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है । प्रथम अध्याय में सामाजिक चेतना के विविध रूपों का वर्णन है जैसे मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, व्यक्तिवाद और समाजवाद । 'विषय प्रवेश' के आरम्भ में ही समाज शब्द के अर्थ को स्पष्ट किया गया है तथा विभिन्न विद्वानों के मत द्वारा समाज के रूप को दर्शाया है । व्यक्तियों की भीड़ को समाज नहीं कहा जा सकता, बल्कि समाज एक ऐसा संगठन है, जिसमें व्यक्तियों के पारस्परिक औपचारिक सम्बन्ध होते हैं, जो एक दूसरे के साथ जुड़े होते हैं । सामान्य समाज, विशिष्ट समाज, सरल समाज और जटिल समाज आदि समाज के विभिन्न रूप होते हैं । इसके बाद सामाजिक चेतना के अर्थ को स्पष्ट किया गया है । परम्परागत रूढ़ियों को तोड़कर आधुनिक युग में अपने तरीके से अपनी बात कहना और समाज सुधार के स्वर में अपनी बात कहना ही सामाजिक चेतना है । मार्क्सवादी विचारधारा का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है और इस विचारधारा से समाज में महान परिवर्तन आया है । मार्क्सवादी ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते हैं, जो वर्ग और आर्थिक विषमता से रहित हो । ये मानव की सामाजिक स्थिति को चेतना का आधार मानते हैं । अतः उनका समाजवाद सम्पूर्ण मानव जीवन से सम्बन्धित था ।

अस्तित्ववादी विचारधारा का विकास मानवीय मूल्यों का ह्रास, निर्मम संहार, दुख, भय, संत्रास आदि के कारण हुआ । प्रथम महायुद्ध के बाद जर्मनी से प्रारम्भ होकर अनेक देशो में फैल गया । यह वाद ईश्वर और धर्म में भी विश्वास नहीं रखता था । अस्तित्ववाद व्यक्तिगत मानवीय स्वतन्त्रता पर विशेष बल देकर आधुनिक युग की सबसे बड़ी विशेषता

और मांग को उजागर करता है । अतः अस्तित्ववाद में मनुष्य की समस्या ही सर्वोपरि है ।

व्यक्तिवादी विचारधारा आधुनिक युग की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण विचारधारा है । धर्म के नाम पर रक्तपात, शोषण प्रणाली और घृणा के विरोध के फलस्वरूप ही व्यक्तिवादी विचारधारा का जन्म हुआ । व्यक्तिवाद ने मानव की प्रतिष्ठा स्थापित की । मानव हित चेतना को रूढ़ियों के बन्धन से मुक्त करके वैज्ञानिक युग से जोड़ना और सामाजिक स्तर पर लाना ही इस विचारधारा का प्रमुख ध्येय है ।

समाजवाद एक ऐसा आन्दोलन है जो सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण करके वर्ग रहित समाज की स्थापना करना चाहता है । यह विचारधारा मार्क्सवाद की हिंसात्मक पद्धति का विरोध करते हुए समाज के आर्थिक ढ़ाचे में परिवर्तन लाने के पक्ष में है । अतः इस विचारधारा के अनुसार समाज में भीषण आर्थिक विषमता नहीं होगी और अधिकारों की समानता होगी ।

द्वितीय अध्याय में बलदेव वंशी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है । उनका जन्म एक जून 1938 को मुल्तान शहर में हुआ । भारत–पाक विभाजन के कारण दिल्ली में आकर, बारह वर्ष की आयु में ही रोजी–रोटी के लिए छोटे–मोटे काम करते रहे । मैट्रिक परीक्षा के लगभग एक वर्ष बाद उनका विवाह हुआ । उनके तीन पुत्र है । उनकी पत्नी सुशीला की मृत्यु के बाद, दूसरा विवाह न करके बच्चों का पालन–पोषण स्वयं किया । घर में आर्थिक संकट होते हुए भी वंशी जी ने पढ़ाई से मोह नहीं त्यागा

बल्कि निरन्तर संघर्ष करते हुए एम.ए., पी.एच.डी. की उपाधि ग्रहण की । आज वे अरविन्द महाविद्यालय (सांध्य) मालवीय नगर दिल्ली में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं ।

इसके बाद उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला है और बारह काव्य संग्रहों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । उनकी प्रथम रचना है – 'दर्शक दीर्घा से', जिसमें जीवन की कठिनाइयों और वास्तविकता को उजागर किया गया है । इस संग्रह की पहली कविता 'छूटा हुआ तीर' में आदमी की अंतर्व्यथा व्यक्त हुई है । पौराणिक मिथकीय सन्दर्भो के द्वारा आज के भारतीय परिवेश में व्यक्ति की नियति को उद्‌घाटित किया गया है । अतः इस संग्रह की कविताओं में विविधता तथा अनुभूति की प्रामाणिकता विद्यमान है ।

'उपनगर में वापसी' वंशी जी का दूसरा काव्य संग्रह है जिसमें कवि का नगर बोध प्रकट हुआ है । यह एक यथार्थपरक रचना है और लम्बी कविता होते हुए संवादो का अधिक प्रयोग किया गया है । खण्ड काव्य की भांति इसमें कई अर्न्तकथाएं हैं जो मानव स्थिति को उजागर करती है । अतः यह विडम्बनाओं के चक्रों में घूमती हुई महानगर के मध्यम वर्ग की कविता है ।

'अन्धेरे के बावजूद' काव्य संग्रह की कविताओं में विचार तत्व विद्यमान है जो वंशी को विचारवान कवि सिद्ध करते हैं । वर्तमान में व्याप्त असन्तोष, असुरक्षा, टूटन, कत्लेआम तथा बलात्कार जैसी समस्याएँ इस कविता में प्रकट हुई है । अतः यह संग्रह विडम्बना–विसंगति का आख्यान प्रस्तुत करता है ।

'बच्चे की दुनियां' काव्य संग्रह बाल–मनोविज्ञान पर आधारित है । यह कविता वंशी जी की महत्वपूर्ण और सराहनीय कविता है । इसमें बाल मनोजगत की भावनाओं, संवेदनाओं को बड़ी गहराई और सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया है । मेमने से खेलते हुए बच्चे कैसे भेड़िये से डर जाते हैं । इसका वर्णन भी कवि ने बड़ी सहजता से किया है । अतः इस संग्रह की सभी कविताएं कवि के कोमल मन से तथा भीगी संवेदनाओं से भरी हुई है ।

'आत्मदान' मिथक काव्य है जो अहल्या की कथा पर आधारित है । इसमें नारी जीवन की सार्थकता, नारी पुरूष के सम्बन्धों और समाज में नारी की स्थिति व स्थान को प्रकट करती है । 'आत्मदान' पौराणिक कथानक होते हुए भी आज के सन्दर्भ में नारी की समस्याओं का समाधान करता हुआ महाकाव्य माना जा सकता है ।

'कहीं कोई आवाज नहीं' संग्रह की कविताओं में प्रकृति की पीड़ा को मनुष्य की पीड़ा के भीतर से देखने का प्रयास है । दंगो का प्रभाव भी मनुष्य और प्रकृति दोनो पर पड़ता है । 'चुनाव और चुनाव' में कवि ने चुनाव के समय होने वाले अन्याय का पर्दाफाश किया है । अन्याय, अत्याचार से उत्पीड़ित जनता प्रतिवाद करना चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाती । इसी बेचैनी को कविताओं में प्रकट किया गया है ।

'हवा में खिलखिलाती लौ' संग्रह प्रकृति और मानव के रिश्ते की कविताएं हैं, जो संवेदनशील चेतना जगाती है । औद्योगिक महानगरीय संस्कृति में प्रकृति किस प्रकार दम तोड़ रही है । असमय कटने पर वृक्षों की रूहें चिल्लाती है तो कवि का हृदय द्रवित होता

है । पहाड़, नदियां, वृक्ष आदि सभी से प्रेमपूर्ण रिश्ता हैं । यह काव्य संग्रह कविगत सहजता की वास्तविक परिणति है ।

'नदी पर खुलता द्वार' एक यथार्थवादी रचना है । इस संग्रह की कविताएं दो भागों में विभक्त है । प्रथम अठारह कविताएं सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक असंगतियों–विसंगतियों, कुठाओं आदि का वास्तविक रूप प्रकट करती है । दूसरी बत्तीस कविताओं में जीवन की साधना, चिंतन, अध्यात्म आदि विषयों पर आधारित है, जो भारतीय समाज का सच्चा चित्रण है । अतः इस संग्रह की कविताएं समकालीन संवेदना से अभिभूत है ।

'मन्यु' एक मिथक काव्य है । इसकी रचना युगबोध और जातीय संकट के दबाव में हुई है । घृणा, क्रोध, आक्रोश, विद्रोह, विरोध, संघर्ष, क्रान्ति ये सारे भाव काव्य संग्रह में प्रयोग किए गए हैं । इस संग्रह की कविताएं क्रम से चलती रहती है । 'मन्यु' आज की युवा शक्ति और आक्रोश का प्रतीक है । इस कृति से वंशी जी की खास पहचान बनी है ।

'वाक्गंगा' चेतना के विकास की कविता है । इस पौराणिक मिथक के माध्यम से एक प्रकार की खोज है । गंगा अवतरण की कथा के माध्यम से वाणी और सम्पूर्ण मानव सृष्टि की उत्पत्ति पर विचार किया गया है । इस मिथकीय रचना में कवि ने एक और गंगा को वाणी का रूप माना है तो दूसरी और उसे धरती पर उतार कर युग की पावन चेतना बताया है ।

'इतिहास में आग' काव्य संग्रह में छः लम्बी कविताएं है । अस्त्र–शस्त्र, बारूद, परमाणु विस्फोट आदि आदमी के साथ–साथ प्रकृति को भी नुकसान पहुँचा रही है । संसार में व्याप्त हिंसा, क्रोध, अपराधी प्रवृति, बमों में उड़ती बस्तियाँ, भयभीत भागती परछाईयाँ, सरकारी संस्कृति का चीखता चौंधभरा प्रदर्शन, नेता का चरित्र और जनता का भाग्य आदि सभी स्थितियों पर वंशी ने प्रकाश डाला हे । यह एक महत्वपूर्ण और अत्याधुनिक रचना है ।

'पत्थर तक जाग रहे हैं' काव्य संग्रह की सभी कविताएं यथार्थपरक हैं । शीर्षक कविता 'पत्थर तक जाग रहे हैं', में कवि ने जड़ में भी चेतन होने का विश्वास जगाया है। पत्थर में भी चेतना होती है और उसी चेतना को पूजा जाता है अर्थात पत्थर की मूर्तियों की पूजा होती है । अन्य कविताएं कुछ यादों व मीठी स्मृतियों से जुड़ी है । भगिनी निवेदिता से प्रभावित होकर भी उन्होंने एक कविता उन्हें समर्पित की है । अतः कवि सम्पूर्ण संसार में प्राणियों के साथ–साथ सम्पूर्ण सत्ता में भी चेतना का अनुभव, करता है, और व्यंग्य करता है कि पत्थर में चेतना है, परन्तु आदमी की चेतना आज मरती जा रही है ।

तृतीय अध्याय के अर्न्तगत बलदेव वंशी के काव्य में समाजाध्यात्म चेतना पर प्रकाश डाला गया है । धर्म का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य को सद्मार्ग की ओर ले जाना है । वंशी जी ने सत कर्म को ही इन्सान का धर्म माना है । सत्य धर्म का मूल सिद्धान्त है । ईश्वर सर्वव्यापक है और वह सबका पालन कर्ता है । संकट की घड़ी में भी ईश्वर ही साथ देता है । पुरूष और प्रकृति के अन्तर्गत इन दोनो में गहरा सम्बन्ध दर्शाया गया है । प्रकृति

के बिना पुरूष का अस्तित्व ही नही है । सांसारिक कष्ट से छुटकारा पाना ही मोक्ष है । वंशी जी के काव्य मे सामान्य मोक्ष को ही अधिक स्थान मिला है, धर्म और अध्यात्म की भी विस्तार सें व्याख्या की गई है । धर्म का सम्बन्ध मानव की बाहरी एवं सांसारिक प्रक्रिया से है, तो अध्यात्म का सम्बन्ध मानव की आन्तरिक प्रक्रिया से है । धर्म का सम्बन्ध इस लोक से और अध्यात्म का परलोक से है । वंशी के काव्य में आध्यात्मिक पक्ष अधिक श्रेष्ठ है ।

बलदेव वंशी पर मार्क्सवादी विचारधारा का भी गहरा प्रभाव पड़ा है । इसी कारण इस विचारधारा को अपनी कविताओं में स्थान दिया है । 'कहीं कोई आवाज नहीं' में तो इसे प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है जब वे कहते हैं –

"शोषण को अपनी तलवार
और तुम्हें अपनी ढ़ाल
समझने वाले समझदार
फल फूल रहे हैं, क्योंकि
दोहने के लिए उन्हें
तुम मिल गए हो ।"

'मन्यु' कविता में तो कवि के क्रान्तिकारी और विद्रोही विचार उजागर होते है । शोषक के प्रति घृणा और शोषित के प्रति प्रेम और दया दिखाकर वंशी जी ने मार्क्सवाद के सिद्धान्त का पालन किया है । अतः उनकी कविताओं पर मार्क्सवाद का भी गहरा प्रभाव पड़ा है । अन्य भक्त कवियों की तरह ही वंशी जी भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण को

लेकर चले । जीव, जगत, आत्मा, परमात्मा के रहस्यों को जानने की उत्सुकता उनकी कविताओं में विद्यमान है । जीव नश्वर है और परम ब्रहमा का अंश है । परमात्मा सर्वाधिक शक्तिशाली और सर्वत्र विद्यमान है ।

इस अध्याय के अन्तिम शीर्षक में वंशी की काव्य चेतना का मौलिक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है । कविता लिखते समय वंशी जी लकीर के फ़कीर नहीं बने बल्कि प्रचलित काव्य विधाओं से हट कर अपनी मौलिकता का परिचय दिया । यदि स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज का सीधा सच्चा दर्शन करना है तो 'उपनगर मे वापसी' और 'नदी पर खुलता द्वार' की कविताएं ही प्रर्याप्त है । इनमें हमें उपनगर में आने वाली कठिनाईयों का अनुभव होता है ।

चतुर्थ अध्याय में सामाजिक चेतना के अन्तर अनुशासनिक आयाम इतिहास बोध, दिक्काल बोध, विज्ञान बोध, प्रकृति संदर्भ, पत्नी और बच्चा, मिथक बोध का विस्तार से वर्णन किया गया है । बलदेव वंशी का इतिहास बोध बाह्य और अन्तर के द्वन्द्व को रेखांकित करता हुआ, आंतरिकता के तत्वों (राग, दर्द) को समेटता हुआ, अन्त में इतिहास की सृजनात्मक शक्ति, गति को पकड़ने का प्रयत्न करता है । इतिहास बोध का सबसे व्यापक सन्दर्भ 'अन्धेरे के बावजूद' कविता में प्रकट हुआ है । 'मन्यु' मिथक काव्य होते हुए ऐतिहासिक घटनाओं पर आधाति है । 'उपनगर में वापसी' और 'वाक गंगा' में पौराणिक ऐतिहासिक घटनाओं को स्थान मिला है । कविताओं में अनेक रूपाकारों के द्वारा भी इतिहास बोध प्रस्तुत किया है । अतः वंशी ने अपनी कविताओं में ऐतिहासिक घटनाओं को इस तरह संजोया है कि ये आधुनिक ही प्रतीत होती है ।

बलदेव वंशी की कविताओं में दिक् का बोध अधिकतर प्रकृति–सन्दर्भ में ही प्राप्त होता है । 'दर्शक दीर्घा से' की कविताओं में व्यक्ति और काल के संघर्ष मूलक नकारात्मक रिश्ते का वर्णन हुआ है तो दूसरी और 'कहीं कोई आवाज नहीं' तथा 'आत्मदान' में काल के संघर्ष–मूलक सकारात्मक संघर्ष मूलक रूप का वर्णन हुआ है । बलदेव वंशी का काल बोध यथार्थ मूलक अधिक है ।

'विज्ञान बोध' को भी उनके रचना संसार में व्यापक स्थान मिला है । 'कहीं कोई आवाज नहीं' में जीव विज्ञान या प्राणी विज्ञान को लिया है तो 'उपनगर में वापसी' में वैज्ञानिक घटनाओं और रूपाकारों के माध्यम से भूगर्भीय विस्फोट का सहारा लेकर मानसिक द्वन्द्व को व्यक्त किया है । लेकिन उनकी कविताओं में गणितीय रूपाकारों का प्रयोग काफी सीमित है । वंशी जी के काव्य में विज्ञान बोध सापेक्ष है और उसमें वैचारिकता का एक गहरा पुट है ।

प्रकृति सन्दर्भ की जहां तक बात है वंशी जी ने प्रकृति के माध्यम से अपनी सोच को गतिशील किया है । उसी से प्रेरणा लेकर अपने विचार कविताओं मे उतारे हैं । उन्होंने प्रकृति को मात्र भावनाओं और संवेदनाओं का आरोपण नहीं बनाया है । बिंब, प्रतीक तथा रूपाकार प्रकृति से अधिकतर लिए गए हैं । अतः वंशी जी ने प्रकृति को गहनता से देखा, महसूस किया और फिर कविताओं में उतारा है ।

'पत्नी और बच्चा' बिम्ब वंशी जी की कविताओं में विशेष महत्व रखते हैं । 'कहीं कोई आवाज नहीं' काव्य संग्रह की दोनो कविताएं (पत्नी के प्रति–1, पत्नी के प्रति–2) 'पत्नी के माध्यम से मात्र व्यक्तिगत सम्बन्धों तथा संवेदनाओं को रेखांकित नहीं करती है,

वरन जीवन संघर्ष सृष्टि तत्व तथा पुरूष प्रकृति के अद्वैत को भी रेखांकित करती है । 'पत्नी' की अपेक्षा 'बच्चे' को कवि ने व्यापक सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है । 'बच्चे' का सन्दर्भ मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और पारिवारिक है । 'बच्चे' के द्वारा अनेक सन्दर्भो को एक साथ नियोजित करके उसे गहराई तथा वैचारिकता के साथ पेश किया है ।

मिथकों का प्रयोग कवि ने विभिन्न प्रकार से किया है । जैसे–पौराणिक मिथक, लोकतान्त्रिक मिथक, ऐतिहासिक मिथक आदि । 'मन्यु' कविता में आद्यान्त पौराणिक मिथक का प्रयोग हुआ है । 'दर्शक दीर्घा से' में लोकतान्त्रिक मिथक के अनेक प्रयोग यत्र तत्र मिलते है । ऐतिहासिक मिथकों का प्रयोग 'अन्धेरे के बावजूद' की कविताओं में हुआ है ।

पंचम अध्याय में सामाजिक चेतना के अर्न्तगत सृजन भाषा और विचार का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है । बलदेव वंशी ने समय की मांग के अनुरूप ही अपनी भाषा का प्रयोग किया है । उनकी 'वेदना' एक क्रियात्मक शक्ति के रूप में कारगर सिद्ध हुई है । 'अन्धेरे' के बावजूद' 'आत्मदान' और 'कहीं कोई आवाज नहीं' की 'कविताओं में एक भाषिक अनुशासन के दर्शन होते है । इस प्रकार भाषा की सृजनशीलता के लिए वंशी निरन्तर प्रयासरत है ।

बलदेव वंशी के बिम्ब प्रकृति से अधिक लिए गए हैं । 'उपनगर में वापसी' काव्य संग्रह की कविताओं में पारिवारिक और सामाजिक बिम्बों का अपना ही महत्व है । ये बिम्ब यर्थाथ और सत्य के किसी गतिशील या स्थिर रूप को पकड़ने का प्रयत्न करते हैं । वंशी जी के रचना संसार में पारिवारिक बिम्बों का अपना एक सन्दर्भ है ।

बलदेव वंशी ने सफल प्रतीकों के द्वारा अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है । 'वाक गंगा' में रहस्यात्मक प्रतीको का प्रयोग है जिस कारण वे आनन्दप्रद और प्रभावशाली बन पड़े हैं । 'कहीं कोई आवाज नहीं' की कविता 'समुद्र' में समुद्र को 'काल' के प्रतीक रूप में सफल प्रयोग किया गया है । प्रतीकों ने वंशी के काव्य में समकालीन जीवन जगत की असली तस्वीर खड़ी कर दी है ।

मिथक को रहस्यमयता से निकालकर जीवन और जगत से जोड़ने का कार्य बलदेव वंशी ने किया । उन्होंने मिथकों के प्रति श्रद्धा भाव की अपेक्षा तर्क और विवेचना को अधिक बल दिया । 'आत्मदान', 'वाक गंगा' और 'मन्यु' के मिथकों द्वारा भारतीय समाज के अतीत का पता चलता है ।

विचार और भाषा में गहन सम्बन्ध होता है । मनुष्य के विचार भाषा के द्वारा ही प्रकट होते हैं अर्थात भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है । बलदेव वंशी ने कहीं कहीं पर शायराना भाषाा का प्रयोग करके अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है । जिससे भाषा बिल्कुल नवीन, सजीव और रोमांचक बन गई है । 'उपनगर में वापसी' की कविताओ में विचार का हथियार तलाशा गया है ।

कल्पना और विचार दोनो ही मस्तिष्क की क्रियाएं है । कल्पना पर बुद्धि का नियन्त्रण नहीं होता है और विचार बुद्धि द्वारा ही प्रकट किए जा सकते हैं । विचार क्रियाशील रहकर किसी भी समस्या का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं । बलदेव वंशी ने भी अपनी कविताओं में अपने विचार प्रकट किए हैं । कुछ कविताओं में कल्पना मात्र कल्पना न रहकर एक श्रेष्ठ विचार के रूप में प्रकट हुए हैं ।

बलदेव वंशी की कविताओ में भावों विचारों की प्रधानता है । 'मन्यु' और 'आत्मदान' में भावों के साथ साथ विचारों को भी स्थान मिला है । 'उपनगर मे वापसी' कविता में अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए, दिन–ब–दिन की समस्याओं–प्रभावों से साक्षात्कार कराया है । वंशी जी ने लुभावनी रूप सज्जा एवं कोहरिल बिम्ब प्रतीकों के द्वारा इन भावों को और भी सघन बना दिया है ।

षष्टम अध्याय में सामाजिक चेतना के अन्तर्गत लम्बी कविताओं और मिथक काव्य में, सामाजिक सरोकार का वर्णन किया है । 'उपनगर में वापसी', 'मन्यु', 'आत्मदान', 'एशिया मेला', 'वाक् गंगा' ये पांच लम्बी कविताएं हैं । 'मन्यु', 'आत्मदान' और 'वाक्गंगा' ये तीन बलदेव वंशी के मिथक काव्य है । लम्बी कविता आधुनिक युग की मांग के अनुरूप उभरकर सामने आई है । कविता एक विराट रूपक के माध्यम से युग सत्य को चित्रित करती है । बलदेव वंशी की कविता 'उपनगर मे वापसी' में लम्बी कविता होने के सभी गुण विद्यमान है । इसमें मानवीय विडम्बना का सामाजिकरण वैचारिक धरातल पर हुआ है । इसमें प्रयुक्त ठोस बिम्ब काव्य सौन्दर्य को एक आयाम और सम्पन्नता देते हैं । विचार और बिम्ब का समायोजन भी इसमें उभरकर सामने आया है ।

मिथक एक पौराणिक कल्पना होती है । इसमें दिव्य पात्रों और पौराणिक चरित्रों की प्रधानता होती है । मिथक युगीन यथार्थ को अपेक्षाकृत अधिक गहराई से जांचने परखने का माध्यम है । इसके साथ–साथ प्रक्रियाओं, क्रियाओं, शाश्वत सत्यों, विश्वासों आदि से साक्षात्कार कराने का भी माध्यम है ।

लम्बी कविताओं में सामाजिक व्यवस्था का रूप उभरकर सामने आया है । चाहे वे समाज में बढ़ती कुरीतियां हो या बेरोजगारी, अव्यवस्था या अमानवीय व्यवहार, इन सब को वंशी ने बड़ी गहराई और गम्भीरता से प्रस्तुत किया है । 'उपनगर में वापसी' कविता में समाज के कारूणिक और त्रासद दृश्य है । 'मन्यु', 'आत्मदान' और 'वाक्गंगा' भी ऐसी ही लम्बी कविताएं हैं जिनमें समसामयिक जीवन का संवेदनशील आख्यान हुआ है ।

बलदेव वंशी के काव्य में घटनाओं और मिथकीय चरित्रों का रूपांतरण इस प्रकार हुआ है कि उनके द्वारा सामाजिक विडम्बनाओं का संकेत मिलता है । पात्रों के माध्यम से घटनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि वे समाज का यथार्थ चित्र अंकित करते हैं ।

'आत्मदान' में नारी का समाज में स्थान और उसकी दयनीय स्थिति को प्रस्तुत किया है । पुरूष प्रधान समाज की संतप्त नारी को अहल्या के माध्यम से प्रस्तुत करके भारतीय समाज में पुरूष मूल्यों एवं शासन को एकांगी ठहराया है । 'आत्मदान' ने नारी की समाज में गौण, अवहेलित एवं अपमानित स्थिति की और ध्यान आकर्षित किया है ।

अन्त में कहा जा सकता है कि बलदेव वंशी ने परम्परागत रूढ़ियों को तोड़कर आधुनिक युग में और समाज सुधार के स्वर में अपनी बात कही है, यही उनकी सामाजिक चेतना है ।